छपे हुए पृष्ठों की संख्याः 1

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय1, हैदराबाद

कार्यपत्र 1

विषयः हिन्दी कक्षाः दसवीं

पाठः1 पद (सूरदास)

नामः---------- अनुक्रमांकः---------- दिनांकः--------

पूर्णांकः 15 प्राप्तांकः------

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ , नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

प्रश्न- (1) किसके मन की बात मन में ही रह गई और क्यों? 2

(2) गोपियों की विरहाग्नि और भी अधिक क्यों बढ़ गई? 2

(3) गोपियों को रक्षा की उम्मीद कहाँ से थी? पर उन्हें क्या मिला? 2

(4) इसमें वक्ता और स्रोता कौन-कौन हैं? 1

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 2 x 4 = 8

(1) गोपियाँ किसे बड़भागी कहती हैं और क्यों?

(2) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

(3) गोपियाँ स्वयं को भोली क्यों कहती हैं?

(4) 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?